ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट

अंक : 12 सहयोग शुल्क : रु.1 दिसम्बर 2017

दिव्यांग सेतु

संपादक : - संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

स्टार्टअप्स कंपनियाँ ऐसे अभिनव और परिवर्तनात्मक विचारों के साथ आगे आए, जो विचार दिव्यांगजनों के जीवन को नयी उर्जा दे सकें|
-नरेन्द्र मोदी

कभी मत सोचिए कि आत्मा के लिए कुछ असंभव है, ऐसा सोचना सबसे बड़ा विधर्म है, अगर कोई पाप है, तो वो यही है; ये कहना कि तुम निर्बल हो या अन्य निर्बल हैं।| -संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

अब गैजेट्स और टेक्नोलॉजी ने बच्चों को बहुत स्मार्ट बना दिया है। उन्हें ग्रूमिंग की जरूरत है, ओपिनियन की नहीं। इसलिए पेरेंट्स बच्चों पर अपने ड्रीम्स न थोपें, उन्हें अपना करियर चुनने की आजादी दें।-सचिन तेंदुलकर

कवर स्टोरी
विन्सेंट विलेम वैन गो
पान नं. 08

विशेष लेख
मनोविकार
पान नं. 10

निरामय हेल्थ पॉलिसी

पात्रता

- केन्द्र सरकार द्वारा चलाई जा रही यह पॉलिसी सेरेब्रल, पाल्सी, ऑटिज्म, मेन्टल रिटार्डेशन, मल्टिपल डिसेबिलिटीसे असरग्रस्त दिव्यांगो को मिल सकती है|
- ४०% अथवा उससे अधिक दिव्यांगता से असरग्रस्त व्यक्ति को इस पॉलिसी का लाभ मिल सकेगा|
- रू. २५०/- बी.पी.एल. एवं रु.५००/- ए.पी.एल. दिव्यांगो के लिए सिंगल प्रीमियम

लाभ

रु. १,००,०००/- तक का इंश्योरेंस मिल सकता है|
(निर्धारित किए हुए फंड के अनुसार)

यह प्रीमियम ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट द्वारा भरा जाएगा

आवेदन-पत्र के साथ जमा किए जाने वाले प्रमाण-पत्र/दस्तावेज

सिविल सर्जन का दिव्यांगता दर्शाता प्रमाण-पत्र

(ऊपर बताई गई चार बीमारियों में से किसी भी एक का उल्लेख प्रमाण-पत्र में जरुरी है)

- वर्तमान की पासपोर्ट साइज़ फोटो
- राशनकार्ड की प्रमाणित कोपी
- निवास स्थान का प्रमाण (राशनकार्ड अथवा वोटिंग कार्ड)
- बी.पी.एल. कार्ड (यदि बी.पी.एल. में आते हैं तो)
- बैंक पासबुक की फोटो कोपी (बैंक ISFC कोड के साथ)

संपादकीय

ये दरवाज़ा खोलो तो खुलता नहीं है, इसे तोड़ने का जतन कर रहा हूँ।
अँधेरे में कुछ ज़िन्दगी होम कर दी, उजाले में अब ये हवन कर रहा हूँ।
-दुष्यंत कुमार

आशा है, आपने मतदान जरूर किया होगा| कुछ स्वार्थ से तो कुछ हमारे हक़ के प्रति कर्तव्यनिष्ठा से| खैर, कुछ तनाव सा वक्त भी चल रहा होगा कि कौन सा पक्ष विजयी होगा, किसकी सरकार बनेगी, पूर्ण बहुमत मिलेगा या फिर गठबंधन की सरकार आएगी? प्रश्न बहोत सारे है, निर्भर करेगा की किसने दमखम पिछले वर्षों में दिखाया है|

वैसे भी सर्दी का मौसम उफ़ान पर है| मौसम कुछ खुशनुमा भी है| सुबह की हवाएं ठंडक लिए हुए थपकी देती है| अगले हफ्ते में ठंड पूरी तरह से शबाब में आ जानी चाहिए| कोहरा जब गिरता है तो थोड़ी सी अव्यवस्था जरूर मालूम पड़ती है, लेकिन गुलबदन सी सुहानी धुप निकलती है तब सीना चौड़ा करके चलने का मन करता है| चीज़े, रिश्तें, एहसास सब एक ही तरह से होता है| जब तकलीफ़ होती है तो अकेलापन महसूस होता है, लेकिन जब कोई व्यक्ति/विचार या फिर वक्तव्य ठंड में धूप लेके खड़ा होता है तब जीवन में सलामती महसूस होती है, दुःख की ओझल बूंदे दूर हुई हो एसा महसूस होता है|

हमेशा 'वन वर्ल्ड, वन पीपल' मान के चलिए| दुनिया में विश्वास और संजीदगी बनाए रखें| बातें हमेशा छोटी होती है, लेकिन व्यक्तिमात्र जब तकलीफ़ में होता है तो हमेशा वह बिना वजह तन जाती है| रिग्रेट को हमेशा वर्तमान में खिंच के न लाए, कुछ आज के लिए नया सोचें| पुरानी और गमगीन करती बातों को 'बॉन फायर' में डालें, परिवार के साथ हाथ सेंक ले, थोड़ा तनतना महसूस करें और मौसम का लुफ्त उठाएं| दोस्त व परिवार के साथ दिसम्बर की सर्दियों का आनंद लें| क्रिसमस मनाएं और वर्ष के आखिरी पलों को एन्जॉय करें| नए वर्ष में कुछ नयी बातें लेके हम फिरसे मिलेंगे| एक साल तक आपका सहयोग देने के लिए धन्यवाद|

दिव्यांग सेतु
मासिक पत्रिका

दिसम्बर : 2017, पृष्ठ संख्या : 16,
वर्ष : 01, अंक : 12

प्रेरणास्त्रोत ओर संपादक

संतश्री ॐऋषि प्रितेशभाई

सह-संपादक

मिहिरभाई शाह

मो. 97241 81999

संपर्क-सूत्र

ॐकार फाउन्डेशन ट्रस्ट (NGO)

Trust Reg. No. : E/20646/Ahmedabad

ई-72, आयोजन नगर सोसायटी,

श्रेयस क्रोसिंग के पास, वासणा,

अहमदाबाद

मो. 99749 55365,

9974955125

मुद्रक

प्रिन्ट विजन प्रा. लि.

आंबावाडी बजार, अहमदाबाद-6

फैसले लेने की आजादी से मिली कामयाबी सचिन

वर्ल्ड चिल्ड्रन्स डे पर यूनिसेफ के प्रोग्राम में मास्टर ब्लास्टर ने खेला दिव्यांग बच्चों के साथ क्रिकेट।

'वर्ल्ड चिल्ड्रन्स डे' के मौके पर सचिन तेंडुलकर सोमवार को दिल्ली में यूनिसेफ के एक इवेंट में शामिल हुए। उन्होंने कहा कि १३ साल का था तो मुझे क्रिकेट की वजह से बहुत ट्रैवल करना पड़ता था। शुरू में पेरेंट्स साथ जाते थे, लेकिन बाद में अकेले जाने लगा। कई-कई महीने मुझे मम्मी-पापा से अलग रहना पड़ता था। तब बहुत बुरा लगता था। लेकिन पेरेंट्स की ओर से अपने फैसले खुद लेने की आजादी मिलना मेरी कामयाबी की बड़ी वजह है।

सचिन ने कहा, "बचपन में मैं काफी शरारती था। मेरे पेरेंट्स भी मुझे हैंडल नहीं कर पाते थे। पढ़ाई से ज्यादा मेरा दिमाग खेल और शरारतों में लगता था। लेकिन उम्र के साथ-साथ मैं जिम्मेदार और इंडिपेंडेंट हो गया।"

अब गैजेट्स और टेक्नोलॉजी ने बच्चों को बहुत स्मार्ट बना दिया है। उन्हें ग्रूमिंग की जरूरत है, ओपिनियन की नहीं। इसलिए पेरेंट्स बच्चों पर अपने ड्रीम्स न थोपें, उन्हें अपना करियर चुनने की आजादी दें।"

सचिन ने कहा, "बेटी घर की लक्ष्मी होती है। यह बात सभी कहते हैं, मगर मानता कोई नहीं। आज भी लड़कियों को एजुकेशन, हाइजीन और अपनी सुरक्षा से समझौता करना पड़ रहा है। इसके लिए बेटी को लक्ष्मी कहने भर से काम नहीं चलेगा, समझना भी पड़ेगा।"

सचिन ने त्यागराज स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में भारत के लिए ओलिंपिक खेल चुके स्पेशियल बच्चों (दिव्यांग) के साथ ५-५ ओवर क्रिकेट खेला। उन्हें बॉलिंग, बैटिंग और फील्डिंग के गुर सिखाए।

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 'मन की बात' में राजकोट के युवा दिव्यांग जिगर का नाम लिया

२६ नवम्बर को मन की बात कार्यक्रम में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदीने राजकोट के पैरा स्विमर जिगर जयेशभाई ठक्कर का उल्लेख किया था। जिगर की राष्ट्रीय सिद्धि की बदौलत उसे यह ईनाम मिला था। हाल ही में उन्होंने एशिया में नंबर वन का स्थान हांसिल किया है। उदेपुर के महाराणा प्रताप खेलगांव स्विमिंग पूल में १७वीं राष्ट्रीय पैरा स्विमिंग कम्पीटीशन आयोजित हुई थी। १८ राज्यों के ३३४ पैरा स्विमरों ने हिस्सा लिया था। जिगर ने तिन इवेन्ट में गोल्ड हांसिल किया था। इससे पहले जिगर ११ बार नेशनल एवोर्ड जीत चूका है। जिगर को बचपन से हाथ और पैर में विकृति है।

जिगर ने कहा की, "मोदी साहब ने मेरा नाम लिया उससे में बहोत खुश हूँ। मेरे आत्मबल में बढौती हुई है। में अपने आप को भाग्यशाली समजता हूँ और दुसरे लोगों को भी प्रोत्साहन दूंगा।"

दिव्यांगजनों के लिए AICTE ने स्कोलरशिप की घोषणा की

ऑल इंडिया काउंसिल फॉर टेक्निकल एजुकेशन (एआईसीटीई) १००० अलग-अलग छात्रों को छात्रवृत्ति दे रही है जो तकनीकी शिक्षा लेना चाहते हैं। यह हर युवा छात्र, जो अक्षम है, उसको आगे का अध्ययन करने का और एक सफल और सम्मानजनक भविष्य का नेतृत्व करने का अवसर है। छात्रों को एआईसीटीई के तहत स्नातक पाठ्यक्रम के छात्र होना चाहिए।

आवेदन जमा करने की आखिरी तारीख ३० नवंबर है।

पात्रता मापदंड

- इच्छुक उम्मीदवार एआईसीटीई द्वारा मान्यता प्राप्त किसी भी डिप्लोमा या डिग्री पाठ्यक्रम के पहले वर्ष में होना चाहिए|
- इसके अलावा, पारिवारिक आय प्रतिवर्ष 8 लाख से कम होनी चाहिए|
- इस छात्रवृत्ति के लिए, 40 प्रतिशत विकलांग छात्रों के साथ विशेष रूप से विकलांग छात्र आवेदन कर सकते हैं|

इनाम:

- सभी चयनित उम्मीदवारों को ट्यूशन शुल्क के रूप में ३०,००० रुपये और आकस्मिकता भत्ता के रूप में १० माह के लिए प्रति माह २,००० रुपये मिलेंगे।
- इसके अलावा, प्रतिस्पर्धी परीक्षा आवेदन पत्र, परीक्षा, विशिष्ट उपकरण, नेत्रहीनों के लिए सॉफ़्टवेयर, भाषण और सुनवाई विकलांगों के लिए किताबों, उपकरण, सॉफ्टवेयर, लैपटॉप, डेस्कटॉप, वाहन, फीस की खरीद के लिए ३०,००० रुपये भी दिए जाएंगे।

आवेदन कैसे करें

- इच्छुक उम्मीदवारों को AICTE की आधिकारिक वेबसाइट पर ऑनलाइन आवेदन करने की आवश्यकता है।

स्टीफन होकिंग्स की कार डिज़ाइन करने वाले

- अहमदाबाद में दिव्यांगो के लिए सौप्रथम कैब सर्विस का उद्घाटन हुआ।
- सिटी में डिफरेंटली एबल्ड बच्चों को बैठने-उठने में सरलता बनी रहे उस हेतु के साथ 'मेडोरा' और 'एबिलिटी ओं व्हील्स' द्वारा कैब सर्विस की शरुआत हुई। लोंचिन्ग कार्यक्रम AMA में रखा गया था। यह कार डॉ. फर्डिनन रोड्रिक्स द्वारा तैयार की गई थी। उन्होंने सबसे पहले यह कार स्टीफन होंकिंग्स के लिए तैयार की थी।
- उन्होंने बताया की, उसने १००० से ज्यादा कार मोडिफाई की है। जिसमें खास आगे की सिट रोटेट भी हो सकती है। जिससे दिव्यांग आगे बैठ सकते है। कार में एक लिफ्टवाला ड़ोर भी रहेगा जिससे दिव्यांग व्यक्ति व्हीलचेयर के साथ बैठ सकते है।
- आगे डॉ. फर्डिनन रोड्रिक्स बताते है की, उन्होंने जब पहली बार एसी कार बने तब यह नया कोंसेप्ट था, लेकिन उन्होंने यह चेलेंज एक्सेप्ट किया और तब मुझे ब्रिटिश एम्बेसी की ओर से फोन आया। २०-२२ दिनों में कार मोडिफाई की आर कार्य पूरा किया। यह देखके स्टीफन और उनकी टीम खुश हुई। तब से यह जर्नी शुरू हुई।
- अब वह मुंबई में दिव्यांगो के लिए बस बनाने के लिए कार्य कर रहें है।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

उज्जैन: अब दिव्यांग बिना बाधा कर सकेंगे महाकाल के दर्शन...

मध्य प्रदेश की धार्मिक नगरी उज्जैन के महाकालेश्वर मंदिर में दिव्यांगों को नए साल सौगात मिलने वाली है, जिसके जरिए वे बिना किसी बाधा के महाकालेश्वर के ज्योतिर्लिंग के दर्शन कर सकेंगे।

आधिकारिक जानकारी के मुताबिक, दृष्टिहीन श्रद्धालुओं को विशेष प्रकार का हेडफोन उपलब्ध कराया जाएगा। यह इंटरनेट से जुड़ा होगा और गूगल नेविगेशन से महाकाल परिसर के हर छोटे-बड़े मंदिर की जानकारी के साथ ही रास्ता बताएगा।

इसके साथ ही एक विशेष प्रकार की छड़ी तैयार की गई है, जो किसी भी बाधा को दूर से स्कैन कर इंडीकेट करते हुए वाइब्रेट होगी। महाकाल मन्दिर में ब्रेल संकेतक भी लगाए गए हैं। मन्दिर की सम्पूर्ण जानकारी का पत्रक भी ब्रेल लिपि में बनवाया जा रहा है। महाकाल मन्दिर में रैम्प के निर्माण के साथ-साथ रेलिंग लगाई गई है। महाकाल धर्मशाला के दो कमरे निचले तल पर दिव्यांगजनों के लिए आरक्षित रहेंगे। इन कमरों के अंदर शौचालय रहेगा। अल्प दृष्टिबाधितों के लिए धर्मशाला के आरक्षित कमरों में बिजली के बटनों पर रेडियम लगाया जाएगा। इस व्यवस्था में सूरत के पद्मश्री विजेता कनुभाई टेलरने बहोत सहायता की है।

वाइजाग स्टीलने डिफरेंटली एबल्ड बच्चों के लिए लोन्च की स्किल ट्रेनिंग

इस प्रोग्राम का उद्देश प्लान्ट के आसपास के १०० 'दिव्यांग' लोगों को अच्छी जिंदगी देने हेतु और कमाने हेतु प्रेरित कर स्किल डेवलपमेंट का है|

विभिन्न सीएसआर पहल के माध्यम से विभिन्न गांवों के गांवों में अलग-अलग विकलांग लोगों को समर्थन देने के मामले में आरआईएनएल हमेशा सबसे आगे रहा है, जैसे कि अरुणोदय स्पेशल स्कूल के माध्यम से अलग-अलग बच्चों को शिक्षा प्रदान करना, कृत्रिम अंग, कैलिपर, पीडब्लूडीएस के लिए ट्राई साइकिल प्रदान करना और इस प्रकार जीवन की उनकी गुणवत्ता में सुधार वगैरह कार्य करना|

भारत और पाकिस्तान के बीच पहली बार 'दिव्यांग टी-20', इस्लामाबाद में होगा आयोजन

विश्व विकलांग दिवस पर भारत और पाकिस्तान के बीच पहली बार 'दिव्यांग टी-20' मैच का आयोजन ३ दिसम्बर को इस्लामाबाद में किया जा रहा है। इसमें भारत के दिव्यांग क्रिकेट खिलाड़ियों की टीम हिस्सा ले रही है।

भारतीय टीम के कप्तान फरीदाबाद के अमित सचदेवा हैं।

पाकिस्तान क्रिकेट एसोसिएशन फॉर फिजिकली हैंडीकैप्ड संस्था की ओर से तीन दिवसीय टी-20 प्रतियोगिता का आयोजन तीन से छह दिसंबर तक इस्लामाबाद में किया जाएगा।

गुजरात से विभाभाई कराना राबरी, इमरान अल्लारखा मलिक, गिरिराज सिंह नाथुभा जाडेजा इस टीम में खेलेंगे|

वॉइस फॉर
दिव्यांग

ओड़िशा के सर्वप्रथम दिव्यांग OAS अफसर: संन्यासी बेहरा

ओड़िशा में संन्यासी बेहराने डिस्ट्रिक्ट कलेक्टरेट में चार्ज संभाला| हालाँकि, वे OAS अफसर के तौर पर ओड़िशा के पहले शत प्रतिशत ब्लाइंड दिव्यांग है|

वह जिला प्रतिष्ठान विभाग में प्रशिक्षु अधिकारी के रूप में शामिल होने वाले पहले दृष्टिहीन व्यक्ति बन गए। चार्ज संभाल लेने के बाद, बेहरा ब्रेल लिपि के माध्यम से पूरे कार्यालय का काम कर रहे हैं|

संन्यासी बेहरा पहले दिग्गज है, जिन्होंने 2015 में ओडिशा पब्लिक सर्विस कमिशन (OPSC) द्वारा संचालित ओडिशा एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस (OAS) को क्लियर किया था।

भीम भोई ब्लाइंड स्कूल में मैट्रिक पूरा करने के बाद, बेहरा ने नई दिल्ली में आर्ट्स ब्लेंडर कॉलेज में स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

जीवन में सभी बाधाओं के बावजूद, संन्यासी ने ऑप्शन परीक्षा में भाग लेने के लिए शारीरिक रूप से विकलांग उम्मीदवारों के निषेध के खिलाफ लंबे कानूनी लड़ाई लड़ने के बाद इस उपलब्धि को हासिल किया और प्राप्त किया।

विकलांग लोगों के लिए उनकी लड़ाई पूरे समाज के लिए उल्लेखनीय थी, जब उन्होंने 2011 में ओड़िशा उच्च न्यायालय में एक जनहित याचिका दायर की थी, उसमें जो शारीरिक रूप से विकलांग है वह भी OPSC की परीक्षा में उम्मीदवारी रजिस्टर कर सकें एसी मांग की हुई थी। जनहित याचिका को स्वीकार करते हुए, उच्च न्यायालय ने ओपीएससी को 2014 में ऑर्डर करने के लिए आंखों से वंचित उम्मीदवारों को शामिल करने का आदेश दिया।

हालांकि, 2015 में ओडिशा प्रशासनिक सेवा परीक्षा में ओपीएससी द्वारा जारी अधिसूचना में दृष्टिहीन लोगों के लिए कोई प्रावधान नहीं किया गया था। उन्होंने जुलाई में विकलांग व्यक्तियों के लिए राज्य आयुक्त के समक्ष अपील की, जिसके बाद OPSC ने अगस्त में नेत्रहीन विकलांग उम्मीदवारों को सिविल परीक्षा में भाग लेने की अनुमति दी।

वॉइस फॉर
दिव्यांग

विन्सेंट विलेम वैन गो

(३० मार्च १८५३ – २९ जुलाई १८९०)

नीदरलैण्ड के अत्यंत प्रतिभावान चित्रकार थे जिनकी पर-प्रभाववादी चित्रकारी ने २०वीं शताब्दी की आधुनिक कला पर अमिट छाप छोड़ी है। इनके चित्र विशद रंगों और संवेदनाओं से भरे हैं। जीवनभर इन्हें कोई सम्मान नहीं मिला, बल्कि मानसिक रोगों से लड़ते रहे, अपना कान तक काट डाला और अंततः ३७ वर्ष की आयु में गोली मार कर आत्महत्या कर ली।

मृत्योपरांत इनकी ख्याति बढ़ती ही गई और आज इन्हें संसार के महानतम चित्रकारों में गिना जाता है और आधुनिक कला के संस्थापकों में से एक माना जाता है। वैन गो ने २८ वर्ष की आयु में चित्रकारी करना शुरु किया और जीवन के अंतिम दो वर्षों में अपनी सबसे महत्त्वपूर्ण रचनाएं बनाईं। ९ साल के समय में इन्होंने २००० से अधिक चित्र बनाए जिनमें लगभग ९०० तैल-चित्र शामिल हैं। इनके द्वारा रचित स्वयं-चित्र, परिदृश्य, छवियाँ और सूरजमुखी विश्व की सबसे प्रसिद्ध और महंगी कलाकृतियों में शामिल हैं।

वैन गो ने अपने वयस्क जीवन की शुरुआत की कलाकृतियों के व्यापारियों के साथ काम करते हुए और द हेग, लंदन और पैरिस के बीच काफी घूमे। इसके बाद इन्होंने इंग्लैण्ड में कुछ समय पढ़ाया भी। इनकी कामना थी पादरी बनने की और इसी मकसद से इन्होंने १८७९ से बेल्जियम की एक खान में मिशनरी का काम करना शुरु किया। इसी दौरान इन्होंने आस-पास के लोगों के चित्र बनाना शुरु किया और १८८५ में अपनी पहली मुख्य रचना आलूहारी (The Potato Eaters, द पोटेटो ईटर्स) बनाई। उस समय ये अपने चित्रों में मलिन रंगों का उपयोग करते थे। मार्च १८८६ में ये कलाकार बनने का ध्येय लेकर पैरिस पहुंचे और इनका सामना हुआ फ्रांसीसी प्रभाववादी कलाकारों से। कुछ समय बाद विन्सेंट वैन गो दक्षिणी फ्रांस पहुंचे, जहाँ की चकाचौंध धूप इन्हें बहुत सुहाई। तबसे इनके चित्रों में चमकीले रंगों का प्रयोग बढ़ना शुरु हुआ। आर्ल में रहते हुए इन्होंने अपनी निराली शैली विकसित की जिससे आज इनकी पहचान होती है।

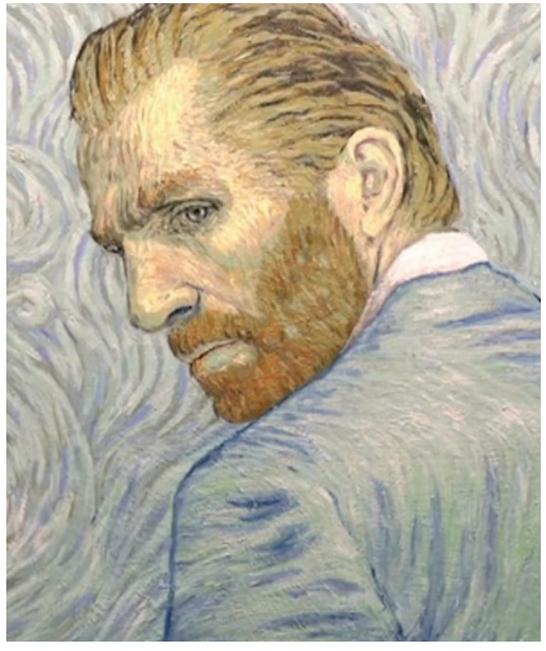

वैन गो को मनोवैज्ञानिक एपिसोड और भ्रम से पीड़ित था और यद्यपि वह अपनी मानसिक स्थिरता के बारे में चिंतित थे, उन्होंने अक्सर अपने शारीरिक स्वास्थ्य की उपेक्षा की, ठीक से नहीं खाया और भारी मात्रा में पिया। गांगुइन के साथ उनकी दोस्ती एक रेजर के साथ टकराव के बाद समाप्त हुई, जब एक क्रोध में, उन्होंने अपने बाएं कान का हिस्सा तोड़ दिया उन्होंने मनश्चिकित्सीय अस्पताल में समय बिताया, जिसमें सेंट-आरए मेरी अवधि भी शामिल थी| पेरिस के नजदीक ऑयूर्स-सुर-ऑइस में एब्यूर राउक्स में खुद को छुट्टी मिलने के बाद वे होम्योपैथिक चिकित्सक पॉल गाशेत की देखभाल में आए। उनकी अवसाद जारी रही और २७ जुलाई १८९० को, वैन गो ने एक रिवोल्वर से खुद को छाती में गोली मार दी।

वान गाग अपने जीवनकाल के दौरान असफल रहे, उन्हें एक पागल और असफलता माना जाता था। उनकी आत्महत्या के बाद वह प्रसिद्ध हो गए| उनके बारे में यह कहा जा सकता है कि, "यहां पागलपन और रचनात्मकता पर व्याख्याएं एकजुट होती हैं"। २०वीं शताब्दी की शुरुआत में उनकी प्रतिष्ठा बढ़ने लगी क्योंकि उनकी पेंटिंग शैली के तत्वों को फोवेज़ और जर्मन अभिव्यक्तियों द्वारा शामिल किया गया था। आगामी दशकों में उन्होंने महत्वपूर्ण आलोचनात्मक, व्यावसायिक और लोकप्रिय सफलता प्राप्त की, और इसे एक महत्वपूर्ण लेकिन दुखद चित्रकार के रूप में याद किया गया, जिसका परेशान व्यक्तित्व अत्याचारित कलाकारों के रोमांटिक आदर्श का प्रतीक है|

वॉइस फॉर
दिव्यांग

गुलज़ार साहबने विन्सेंट विलेम वैन गो के चरित्र को कुछ इस अंदाज में बखूबी लिखा है

तारपीन तेल में कुछ घोली हुई धूप की डलियाँ
मैंने कैनवास में बिख़ेरी थीं मगर
क्या करूँ लोगों को उस धूप में रंग दिखते ही नहीं!
मुझसे कहता था थियो चर्च की सर्विस कर लूँ
और उस गिरजे की ख़िदमत में गुजारूँ
मैं शबोरोज जहाँ-
रात को साया समझते हैं सभी,
दिन को सराबों का सफ़र!
उनको माद्दे की हक़ीकत तो नज़र आती नहीं
मेरी तस्वीरों को कहते हैं, तख़य्युल है
ये सब वाहमा हैं!
मेरे कैनवास पे बने पेड़ की तफ़सील तो देखो
मेरी तख़लीक ख़ुदाबंद के उस पेड़ से
कुछ कम तो नहीं है!
उसने तो बीज को एक हुक्म दिया था शायद,
पेड़ उस बीज की ही कोख में था,
और नुमायाँ भी हुआ
जब कोई टहनी झुकी, पत्ता गिरा, रंग अगर ज़र्द हुआ
उस मुसव्विर ने कहीं दख़ल दिया था,
जो हुआ, सो हुआ-
मैंने हर शाख़ पे, पत्तों के रंग-रूप पे मेहनत की है,
उस हक़ीकत को बयाँ करने में
जो हुस्ने हक़ीकत है असल में
उन दरख़्तों का ये संभला हुआ क़द तो देखो
कैसे ख़ुद्दार हैं ये पेड़, मगर कोई भी मग़रूर नहीं
इनको शेरों की तरह किया मैंने किया है मौजूँ!
देखो तांबे की तरह कैसे दहकते हैं ख़िजां के पत्ते,
कोयला खदानों में झौंके हुए मज़दूरों की शक्लें
लालटेनें हैं, जो शब देर तलक जलतीं रहीं
आलुओं पर जो गुज़र करते हैं कुछ लोग-पोटेटो ईटर्स

एक बत्ती के तले, एक ही हाले में बंधे लगते हैं सारे!
मैंने देखा था हवा खेतों से जब भाग रही थी
अपने कैनवास पे उसे रोक लिया-
रोलां वह चिट्ठीरसां
और वो स्कूल में पढ़ता लड़का
ज़र्द खातून पड़ोसन थी मेरी-
फ़ानी लोगों को तगय्यर से बचा कर उन्हें
कैनवास पे तवारीख़ की उम्रें दी हैं!
सालहा साल ये तस्वीरें बनाई मैंने
मेरे नक्काद मगर बोल नहीं-
उनकी ख़ामोशी खटकती थी मेरे कानों में,
उस पे तस्वीर बनाते हुए इक कव्वे की वह चीख़-पुकार
कव्वा खिड़की पे नहीं, सीधा मेरे कान पे आ बैठता था,
कान ही काट दिया है मैंने!
मेरे पैलेट पे रखी धूप तो अब सूख चुकी है,
तारपीन तेल में जो घोला था सूरज मैंने,
आसमाँ उसका बिछाने के लिए-
चंद बालिश्त का कैनवास भी मेरे पास नहीं है!
मैं यहाँ रेमी में हूं
सेंटरेमी के दवाख़ाने में थोड़ी-सी
मरम्मत के लिए भर्ती हुआ हूँ!
उनका कहना है कई पुर्जे मेरे जहन के अब ठीक नहीं हैं-
मुझे लगता है वो पहले से सवातेज हैं अब!

मनोविकार

मनोविकार किसी व्यक्ति के मानसिक स्वास्थ्य की वह स्थिति है जिसे किसी स्वस्थ व्यक्ति से तुलना करने पर 'सामान्य' नहीं कहा जाता। स्वस्थ व्यक्तियों की तुलना में मनोरोगों से ग्रस्त व्यक्तियों का व्यवहार असामान्यय अथवा दुरनुकूली (मैल एडेप्टिव) निर्धारित किया जाता है| जिसमें महत्वयपूर्ण व्यनथा अथवा असमर्थता अन्तमर्ग्रस्ता होती है। इन्हें मनोरोग, मानसिक रोग, मानसिक बीमारी अथवा मानसिक विकार भी कहते हैं।

मनोरोग मस्तिष्क में रासायनिक असंतुलन की वजह से पैदा होते हैं तथा इनके उपचार के लिए मनोरोग चिकित्सा की जरूरत होती है।

परिचय

मनोविज्ञान में हमारे लिए असामान्य और अनुचित व्यवहारों को मनोविकार कहा जाता है। ये धीरे-धीरे बढ़ते जाते हैं। मनोविकारों के बहुत से कारक हैं, जिनमें आनुवांशिकता, कमजोर व्यक्तित्व, सहनशीलता का अभाव, बाल्यावस्था के अनुभव, तनावपूर्ण परिस्थितियां और इनका सामना करने की असामर्थ्य सम्मिलित हैं।

वे स्थितियां, जिन्हें हल कर पाना एवं उनका सामना करना किसी व्यक्ति को मुश्किल लगता है, उन्हें 'तनाव के कारक' कहते हैं। तनाव किसी व्यक्ति पर ऐसी आवश्यकताओं व मांगों को थोप देता है जिसे पूरा करना वह अति दूभर और मुश्किल समझता है। इन मांगों को पूरा करने में लगातार असफलता मिलने पर व्यक्ति में मानसिक तनाव पैदा होता है।

तनाव : अशांत मानसिक स्वास्थ्य के स्रोत के रूप में

आज के समय में तनाव लोगों के लिए बहुत ही सामान्य

अनुभव बन चुका है, जो कि अधिसंख्य दैहिक और मनोवैज्ञानिक प्रतिक्रियाओं द्वारा व्यक्त होता है। तनाव की पारंपरिक परिभाषा दैहिक प्रतिक्रिया पर केंद्रित है। हैंस शैले (Hans Selye) ने 'तनाव' (स्ट्रेस) शब्द को खोजा और इसकी परिभाषा शरीर की किसी भी आवश्यकता के आधार पर अनिश्चित प्रतिक्रिया के रूप में की। हैंस शैले की पारिभाषा का आधार दैहिक है और यह होर्मोन्स की क्रियाओं को अधिक महत्व देती है, जो ऐड्रिनल और अन्य ग्रन्थियों द्वारा स्रवित होते हैं।

शैले ने दो प्रकार के तनावों की संकल्पना की

(क) यूस्ट्रेस (eustress) अर्थात मध्यम और इच्छित तनाव जैसे कि, प्रतियोगी का खेल खेलते समय होता है|

(ख) डिस्ट्रेस (distress/विपत्ति) जो बुरा, असंयमित, अतार्किक या अवांछित तनाव है।

मनोविकारों के प्रकार

तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करते समय आमतौर पर व्यक्ति समस्या केंद्रित या मनोभाव केंद्रित कूटनीतियों को अपनाता है। समस्या केंद्रित नीति द्वारा व्यक्ति अपने बौद्विक साधानों के प्रयोग से तनावपूर्ण स्थितियों का समाधान ढूंढता है और प्रायः एक प्रभावशाली समाधान की ओर पहुंचता है। मनोभाव केंद्रित नीति द्वारा तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करते समय व्यक्ति भावनात्मक व्यवहार को प्रदर्शित करता है जैसे चिल्लाना। यद्यपि, यदि कोई व्यक्ति तनाव का सामना करने में असमर्थ होता है तब वह प्रतिरोधक-अभिविन्यस्त कूटनीति की ओर रूझान कर लेता है, यदि ये बारबार अपनाए जाएं तो विभिन्न मनोविकार उत्पन्न हो सकते हैं। प्रतिरोधक-अभिविन्यस्त व्यवहार परिस्थिति का सामना करने में समर्थ नहीं बनाते, ये केवल अपनी कार्यवाहियों को न्यायसंगत दिखाने का जरिया मात्र है।

- बाल्यावस्था के विकार
- व्यग्रता विकार
- मनोदशा विकार
- मनोदैहिक और दैहिकरूप विकार
- विघटनशील विकार
- मनोविदलन और मनस्तापी (Psychotic) विकार
- व्यक्तित्व मनोविकार

मनश्चिकित्सा की प्रक्रिया

किसी भी प्रकार के मनोविकारों से निपटने के लिए कुछ विशेष मनश्चिकित्सा प्रक्रिया द्वारा व्यक्ति की सेवा की जाती हैं। वह व्यक्ति जो मनश्चिकित्सा के क्रार्यक्रम का प्रारूप तय करता है वह प्रशिक्षित व्यक्ति होता है, जिसे नैदानिक मनोवैज्ञानिक या मनोचिकित्सक कहते हैं।

1. सौहार्द स्थापना : मनश्चिकित्सक सेवार्थियों से अच्छे और क्रियाशील संबंध निर्मित कर के उन्हें अपने सहयोग का आश्वासन देता है।

2. व्यक्ति वृत्त को तैयार करना : सेवार्थी के परिवार, मित्र, समाज व जीविका के साथ सामंजस्य स्वरूप को ध्यान में रख कर विशेष विकार का व्यक्ति वृत्त तैयार किया जाता है।

3. समस्या पर विचार करना : व्यक्ति वृत्त तैयार करने के पश्चात् मनश्चिकित्सक कुछ ऐसी समस्याओं पर विचार करता है जिन्हें तात्कालिक देखरेख की जरूरत होती है, जिनका नैदानिक जांच एवं साक्षात्कार के अनुसार दवा देकर समाधान किया जा सकता है।

4. उपचारात्मक सत्र : समस्या की प्रकृति और गम्भीरता के अनुसार मनोचिकित्सक सेवार्थी के साथ उपचार केंद्रित सत्र की अगुवाई करता है। प्रत्येक सत्र के पश्चात हुए सुधार का निरीक्षण एवं मूल्यांकन किया जाता है और आवश्यक लगे तो भावी उपचार के तरीकों में बदलाव कर लिया जाता है।

5. उपचारात्मक हस्तक्षेप : यह सुनिश्चित हो जाने पर कि

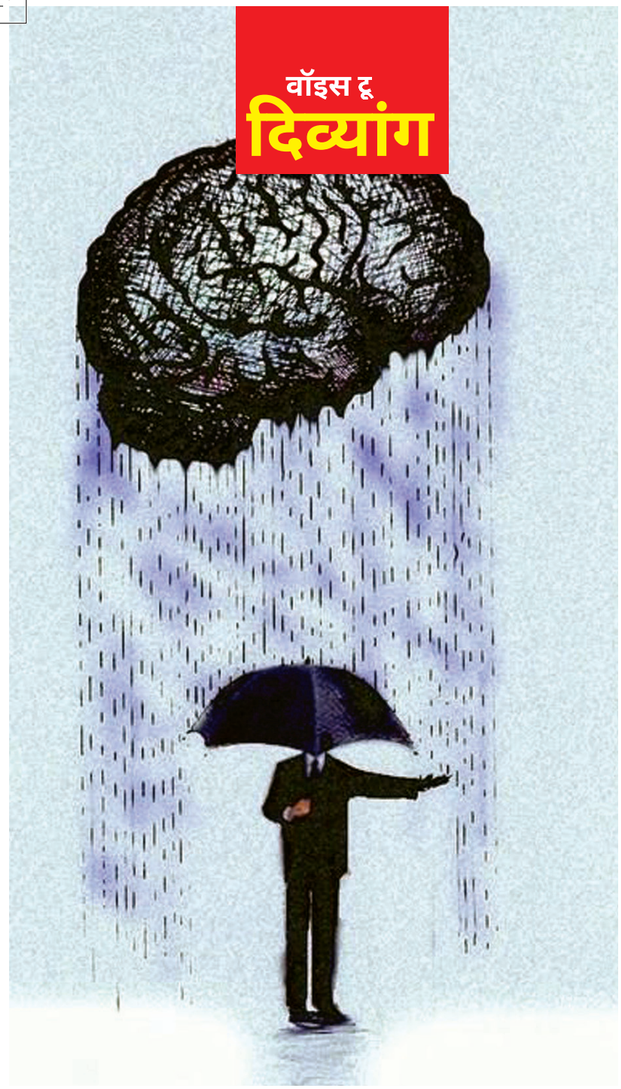

सत्र द्वारा वांछित परिणामों की प्राप्ति हो गई है तब मनोचिकित्सक सत्र को समाप्त कर देता है। सेवार्थी और उसके परिवार जनों को घर पर ही कुछ सुझावों को मानने की सलाह दी जाती है और जरुरत पड़नेपर सेवार्थी को मनोचिकित्सक के पास दोबारा भी बुलाया जा सकता है।

मनोरोगों के मुख्य कारण

- जैविक कारण
- आनुवंशिक
- शारीरिक गठन
- व्यक्तित्व
- शरीरवृत्तिक कारण
- वातावरण जनित कारण
- शारीरिक खान-पान संबंधी कारण
- मनोवैज्ञानिक कारण
- सामाजिक-सांस्कृतिक कारण

गलत धारणाएं

मानसिक रोग या पागलपन एक ऐसा शब्द है जिससे इसके कारणों एवं उपचार के विषय में न जाने कितनी भ्रांतियाँ एवं आशंकाएँ जुड़ी हैं। कुछ लोग इसे एक असाध्य, आनुवांशिक एवं छूत की बीमारी मानते हैं, तो कुछ जादू-टोना, भूत-प्रेत व डायन का प्रकोप। कुछ लोग इसे बीमारी न मानकर जिम्मेदारियों से बचने का नाटक मात्र भी मानते हैं।

अज्ञानी लोग उपचार के लिए स्थानीय या नजदीक ओझा, पंडित, मुल्ला आदि के पास जाकर अनावश्यक भभूत, जड़ी-बूटी का सेवन करते हैं तथा अमानवीय ढ़ंग से सताये जाते हैं ताकि 'पिशाचात्मा' का प्रकोप दूर किया जा सके।

यह सब गलत है। सही धारणा यह है कि यह बीमारी है और वैज्ञानिक ढंग से चिकित्सा विज्ञान द्वारा इसका इलाज संभव है। ये भी सही नहीं है कि-

मानसिक विकार कोई रोग नहीं हैं बल्कि बुरी आत्माओं की वजह से पैदा होते हैं।

- दवाओं के सेवन से बचना चाहिए।
- आपको यह रोग अपनी कमजोरी से हुआ है और इससे बचाव करना चाहिए।
- दवाएं नुकसानदायक होती हैं, ये निर्भरता बढ़ाती हैं और जीवनभर लेनी पड़ती हैं।
- ज्यादातर मनोविकारों का कोई इलाज नहीं होता।
- बच्चों को दवाएं नहीं दी जानी चाहिए।
- इलाज के लिए नींद की गोलियां दी जाती हैं।
- अवसाद जैसे मर्ज अपने आप ठीक होते हैं या प्रभावित व्यक्ति के प्रयासों से।
- देवी देवताओं या झाड़फूंक से रोग सही हो सकता है।

मुनिबा मज़ारी- एक जीती जागती अनुप्रेरणा।

"मैं नि:संदेह ये स्वीकारती हूँ कि मैं मेरे शरीर की वजह से कैद हूँ, पर मेरा मन आज़ाद है, और मेरी आत्मा भी, मैं अब भी बड़े सपने देख सकती हूँ.....", मुनिबा मज़ारी।

आज पाकिस्तान की "आयरन लेडी" अपने ३ साल के बेटे के साथ एक खुशहाल ज़िन्दगी बिता रही है, पर पिछले सात साल की लड़ाई आसान नहीं था। २८ साल की मुनिबा, जब वे २१ साल की थीं, तब एक कार क्रैश का शिकार हो गई थीं ।

पर इस खूबसूरत महिला ने इस हादसे से अपने जज़्बे को टूटने नहीं दिया, और तब से आज तक का उनका विकास एक सफर जैसा है, जबकि उनका कद तकनीकी रूप से सीमित हो चुका है।

"मेरे कलाई की हड्डी टूटी हुयी थी, कंधे की भी... और हॉस्पिटल जाते वक़्त ही मुझे एहसास था कि मेरा आधा शरीर टूट चुका है, और आधा paralyzed हो चुका है..... एक अस्पताल से दूसरे अस्पताल में भटकने के बाद, कराची में एक हॉस्पिटल ने मेरी जांच की, वहां मैं ढाई महीने तक थी, जीने की कोई वजह नहीं थी, मेरे ३ बड़े और २ छोटे ऑपरेशन हुए", ऐसा मुनिबा बताती हैं।

जब वे घर आई, तब भी सुधार कुछ नहीं था, उन्हें बिस्तर से बाँध दिया गया था, और एक व्हील चेयर थमा दिया गया था। जब सब ने उनका साथ छोड़ दिया था, तो कला ने उन्हें संभाला। हॉस्पिटल के दिनों में भी, वे चित्र बनाने लगी थी, और इन चित्र के रंगों ने, उनकी बेजान ज़िन्दगी को थोड़ा सा ज़िंदादिल बनाये रखा। आज वह पहली व्हील-चेयर से जुडी महिला कलाकार हैं। कंटेंट राइटर के काम से भी उन्हें वह संतुष्टि नहीं मिल रही थी, जो उन्हें सामाजिक कार्य करने में मिला ।

हमारे समाज में विकलांग या शारीरिक रूप से दुर्बल लोगों को एक कमज़ोरी का प्रतीक बना के दर्शाया जाता है, उनसे हमदर्दी की जाती है, और ये बात मुनिबा को हरगिज़ गवारा नहीं था। ऐसे ही विकलांग बच्चों को समाज में सही जगह दिलवाने के लिए वे संस्थाओं के साथ जुड़ गयीं।

"हम भी इंसान हैं, हम भी आप की तरह सांस लेते हैं, हमें सहारे की ज़रूरत नहीं है, हम अपनी ज़िन्दगी खुद जीने के काबिल हैं, और हमें वह जीने दें", मुनिबा मज़ारी।

टोनी&गाए के लिए वे ब्रांड एम्बेसडर बनी, और आज वे दुनिया की पहली व्हील-चेयर से जुड़ी, मॉडल हैं।

"व्हील-चेयर बहाना नहीं हो सकता, जिससे मैं कोई काम न करूँ," ऐसा वह कहती हैं। ज़िन्दगी बहुत खूबसूरत है, छोटी छोटी चीज़ों का मलाल रखने से हमें कुछ हासिल नहीं होगा। सच कहती हैं, मज़ारी, अपनी कमज़ोरी को ताक़त बनाने की कला आप सीख गये, तो आकाश आपकी मुठ्ठी में है..... जियें, खुश रहें, हर पल का मज़ा उठाएं, और अपनी क्षमता को निखरने का मौका दें ।

एक ऐसी लड़की जो विकलांग पैदा हुई और इस विकलांगता को अपनी ताकत बनाते हुए सफलता की सीढ़ियां चढ़ती चली गई

उम्मुल खेर जैसी लड़की को जितनी बार सलाम किया जाए, उतना ही कम है| ऐसी बहादुर लड़की समाज में बहुत कम मिलती है| एक ऐसी लड़की जो विकलांग पैदा हुई और इस विकलांगता को अपनी ताकत बनाते हुए सफलता की सीढ़ियां चढ़ती चली गई| एनडीटीवी से बात करते हुए उम्मुल ने अपने संघर्ष की कहानी बताई| उम्मुल का जन्म राजस्थान के पाली मारवाड़ में हुआ| उम्मुल अजैले बोन डिसऑर्डर बीमारी के साथ पैदा हुई थी, एक ऐसा बॉन डिसऑर्डर जो बच्चो की हड्डियां कमज़ोर कर देता है| हड्डियां कमज़ोर हो जाने की वजह से जब बच्चा गिर जाता है तो फ्रैक्चर होने की ज्यादा संभावना रहती है| इस वजह से 28 साल की उम्र में उम्मुल को 15 से भी ज्यादा बार फ्रैक्चर का सामना करना पड़ा है|

बचपन निजामुद्दीन की झुग्गी में बीता

पहले दिल्लीद में निजामुद्दीन के पास झुग्गियां हुआ करती थी| उसी झुग्गी् इलाके में उम्मुल का बचपन बीता| उम्मुल के पापा सड़क के फुटपाथ पर मूंगफली बेचा करते थे| 2001 में झुग्गियां टूट गईं, फिर उम्मुल और उनका परिवार त्रिलोकपुरी इलाके में चले गए| त्रिलोकपुरी में किराये के मकान में रहे| उस वक्त उम्मुल सातवीं कक्षा की छात्रा थी| घर में पैसा नहीं हुआ करता था| उम्मुल के परिवार के लोग नहीं चाहते थे कि उम्मुल आगे पढ़ाई करे लेकिन उम्मुल अपना पढ़ाई जारी रखना चाहती थी| इस वजह से अपना ख़र्चा उठाने के लिए उम्मुल ने आसपास के बच्चों को ट्यूशन पढ़ाना शुरू कर दिया| एक बच्चे को पढ़ाने से 50 से 60 रुपया मिलता था|

जब मां का हो गया देहांत

उम्मुल जब स्कूल में थी तब उनकी मां का देहांत हो गया| उम्मुल की सौतेली मां के साथ उम्मुल का रिश्ता अच्छा नहीं था| घर में और भी कई समस्याएं थीं| उम्मुल के पापा के पास कोई नौकरी न होने की वजह से घर की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी| उम्मुल की पढ़ाई को लेकर घर में रोज़ झगड़ा हुआ करता था| अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए उम्मुल अपने घर से अलग हो गई तब वो नवीं क्लास में थी| त्रिलोकपुरी में एक छोटा सा कमरा किराया पर लिया| एक नवीं क्लास की लड़की को त्रिलोकपुरी इलाके में अकेले किराए पर रहना आसान नहीं था| डर का माहौल था| उम्मुल को बहुत समस्या का सामना करना पड़ा| उम्मुल रोज आठ-आठ घंटे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती थी|

शुरुआत में विकलांग बच्चों की स्कूल में हुई पढ़ाई

पांचवीं क्लास तक दिल्ली के आईटीओ में विकलांग बच्चों की स्कूल में पढ़ाई की| फिर आठवीं तक कड़कड़डूमा के अमर

ज्योति चैरिटेबल ट्रस्ट में पढाई की| यहां मुक्त में पढ़ाई होती थी| आठवीं क्लास में उम्मुल स्कूल की टॉपर थी फिर स्कॉलरशिप के जरिये दाख़िला एक प्राइवेट स्कूल में हुआ| यहां उम्मुल ने 12वीं तक पढ़ाई की| दसवीं में उम्मुल के 91 प्रतिशत मार्क्सक थे| 12वीं क्लास में उम्मुल के 90 प्रतिशत मार्क्स थे| तब भी उम्मुल अकेले रहती थी, ट्यूशन पढ़ाती थी| 12वीं के बाद उम्मुल ने दिल्ली यूनिवर्सिटी के गार्गी कॉलेज में साइकोलॉजी से ग्रेजुएशन किया| उम्मुल की संघर्ष की कहानी धीरे धीरे सबको पता चली|

गार्गी कॉलेज से ग्रेजुएशन किया

उम्मुल जब गार्गी कॉलेज में थी तब अलग-अलग देशों में दिव्यांग लोगों के कार्यक्रम में भारत का प्रतिनिधित्व किया| 2011 में उम्मुल सबसे पहले ऐसे कार्यक्रम के तहत दक्षिण कोरिया गई| दिल्ली यूनिवर्सिटी में जब उम्मुल पढ़ाई करती थी तब भी बहुत सारे बच्चों को ट्यूशन पढ़ाती थी| उम्मुल तीन बजे से लेकर रात को ग्यारह बजे तक ट्यूशन पढ़ाती थी| अगर उम्मुल ट्यूशन नहीं पढ़ाती तो घर का किराया और खाने-पीने का ख़र्चा नहीं निकाल पाती| ग्रेजुएशन के बाद उम्मुल को साइकोलॉजी विषय छोड़ना पड़ा| दरअसल साइकॉलॉजी में इंटर्नशिप होती थी| उम्मुल अगर इंटरशिप करती तो ट्यूशन नहीं पढ़ा पाती| फिर उम्मुल का जेएनयू में मास्टर ऑफ़ आर्ट्स के लिए एडमिशन हुआ| उम्मुल ने साइकोलॉजी की जगह इंटरनेशनल रिलेशंस चुना|

जेएनयू में उम्मुल को हॉस्टल मिल गया| जेएनयू के हॉस्टल का कम चार्ज था अब उम्मुल को ज्यादा ट्यूशन पढ़ाने की जरुरत नहीं पड़ी| अपने एमए पूरा करने के बाद उम्मुल जेएनयू में एमफिल में दाख़िला ली| 2014 में उम्मुल का जापान के इंटरनेशनल लीडरशिप ट्रेनिंग प्रोग्राम के लिए चयन हुआ| 18 साल के इतिहास में सिर्फ तीन भारतीय इस प्रोग्राम के लिए सेलेक्ट हो पाए थे और उम्मुल ऐसी चौथी भारतीय थीं जो इस प्रोग्राम के लिए सेलेक्ट हुई थीं| फिर उम्मुल एक साल छुट्टी लेकर इस प्रोग्राम के लिए जापान चली गई| इस प्रोग्राम के

जरिये उम्मुल दिव्यां ग लोगों को यह सिखाती थी कि कैसे एक इज्जजत की ज़िंदगी जी जाए| एक साल ट्रेनिंग प्रोग्राम के बाद उम्मुल भारत वापस आई और अपनी एमफिल की पढ़ाई पूरी की|

एमफिल पूरी करने के साथ-साथ उम्मुल ने जेआरफ भी क्लियर कर ली| अब उम्मुल को पैसे मिलने लगे| अब उम्मुल के पास पैसे की समस्या लगभग खत्म हो गई| एमफिल पूरा करने के बाद उम्मुल ने जेएनयू में पीएचडी में दाख़िला लिया| जनवरी 2016 में उम्मुल ने आईएएस के लिए तैयारी शुरू की और अपने पहले प्रयास में सिविल सर्विस की परीक्षा पास कर| उम्मुल ने 420वीं रैंक हासिल की है|

अपना माता-पिता को हर सुविधाएँ देना चाहती हैं उम्मुल

उम्मुल का कहना है कि उनके परिवार के लोगों ने उनके साथ जो भी किया वह उनकी गलती थी| उम्मुल का कहना है कि शायद उनके पिता ने लड़कियों को ज्यादा पढ़ते हुए नहीं देखा था इसीलिए वह उम्मुल को नहीं पढ़ाना चाहते थे| उम्मुल का कहना है कि उसने अपने परिवार को माफ़ कर दिया है| अब परिवार के साथ उसके अच्छेम संबंध हैं| अब उम्मुल के माता-पिता उनके बड़े भाई के साथ राजस्थान में रह रहे हैं| उम्मुल का कहना है कि वह अपने माता-पिता का बहुत सम्मान करती है और अब वह उन्हें हर तरह का आराम देना चाहती है जोकि उनका हक है|

दिव्यांगो के लिए स्माइल यर

दिनांक २६ जनवरी, २०१७ से दिनांक २६ जनवरी २०१८ तक ॐकार, फाउन्डेशन ट्रस्ट NGO के माध्यम से क्रिस्टल डेन्टल केर (डॉ. शाश्वत जैन एवं चिकित्सक दल) दिव्यांगो व शहीद सैनिकों के जरुरमंद परिवारों के लिए नि:शुल्क जाँच एवं निदान के लिए प्रतिबद्ध है|

KRYSTAL DENTAL CARE

DSD

DIGITAL SMILE DESIGN & IMPLANT CENTRE

180, Titanium City Centre Mall, Near IOC Petrol pump,
Anandnagar Road, Satellite, Ahmedabad-380015
Clinic: 079 48008004

DR. SHASHSVAT JAIN
+91 9978601890

MDS : Prosthodontics (Manipal)
PGCOI : Implant Specialist
DSD : Dental Smile Design

TIMINGS:
10:00 am to 8:00 pm

CONSULTANT PROSTHODONTIST & IMPLANTOLOGIST

- Maxillofacial Prosthetics
  Cancer Rehabilitation
  Trauma Rehabilitation
- Implant Rehabilitation
- Digital Smile Designing
- Full Mouth Rehabilitation
- Crowns & Veneers
- Full & partial Dentures

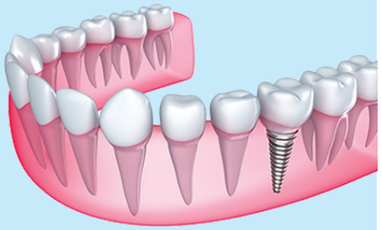

દાંતના તમામ દર્દોનું એકમાત્ર સમાધાન એટલે... ક્રિસ્ટલ ડેન્ટલ કેર

Digital Smile Designing

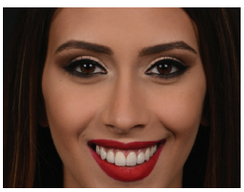

Crown Teatment

Before

After

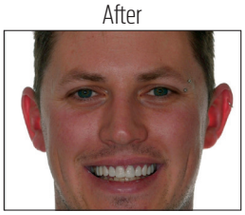

Implant Teatment

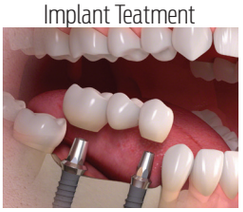

WHAT WE DO

- Implant treatment
- Digital Smile Design
- Dentistry for aged patients
- Fixed and removable dentures
- Crowns & veneers
- Prosthetic replacements (Eye, Ear, Nose, Fingers)
- Orthodontics
- Dentistry for kids
- Root canal treatment
- Gum treatment
- Laser dentistry

OPG facility available
Pick up & Drop facility for senior citizens

Website : www.krystaldentalcare.com · E-mail : drs@krystaldentalcare.com